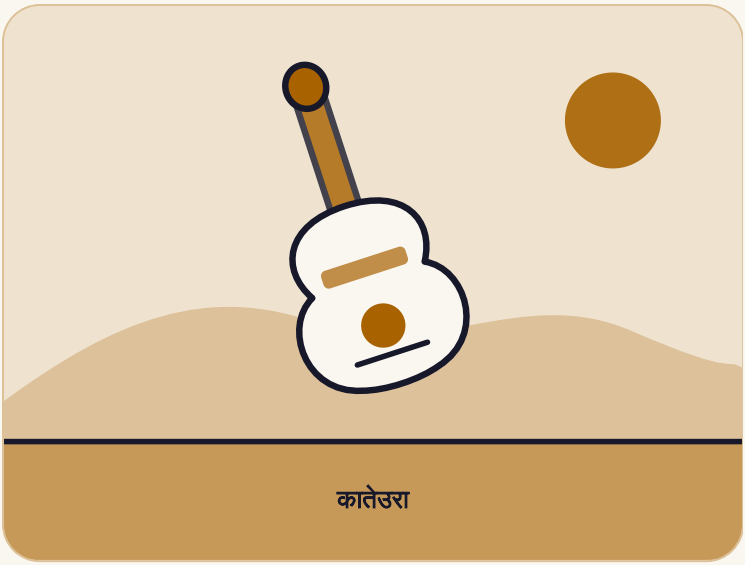

पैराग्वे

कचरे से बने साज़ों का ऑर्केस्ट्रा

पैराग्वे के कचरे के ढेर की बस्ती में बच्चे ओवन की ट्रे और तेल के ड्रमों से बने वायलिन बजाते हैं।

कहाँ कातेउरा, असुंसियोन के पास

कौन फ़ाबियो चावेज़ और निकोलास गोमेज़, जिन्होंने कचरे से ऑर्केस्ट्रा बनाया

कब 2006 से 2016

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

कातेउरा पैराग्वे की राजधानी असुंसियोन के बाहर, कचरे के एक विशाल ढेर के पास की ग़रीब बस्ती है। वहाँ कई परिवार कचरा बीनकर रोज़ी कमाते हैं। वे प्लास्टिक और धातु छाँटकर बेचते हैं। 2012 में समाचार एजेंसी AP ने बताया कि वहाँ लगभग 25,000 परिवार रहते थे।

2006 में फ़ाबियो चावेज़ नाम का एक आदमी इस ढेर पर काम करने आया। वह एक तकनीशियन था, जो बीनने वालों को कचरा छाँटने में मदद करता था। वह संगीत का शिक्षक भी था।

बीनने वालों के बच्चे अक्सर कचरे के बीच खेलते थे, जबकि उनके माँ-बाप काम करते थे। चावेज़ दो गिटार ले आए, ताकि बच्चे व्यस्त रहें और ख़तरनाक मशीनों से दूर रहें। और भी बच्चे जुड़ना चाहते थे। लेकिन उनके पास बाँटने के लिए सिर्फ़ पाँच साज़ थे।

कचरे से संगीत

असली साज़ बहुत महँगे थे। कोई बच्चा उन्हें सुरक्षित घर नहीं ले जा सकता था। परिवार उसे बेच सकता था।

> एक वायलिन की क़ीमत कचरा बीनने वाले के घर से ज़्यादा होती है।
>
> फ़ाबियो चावेज़, Guardian में उद्धृत

इसलिए चावेज़ ने निकोलास गोमेज़ से मदद माँगी, जो कचरा बीनने वाले और बढ़ई थे। गोमेज़ ने पाँचवीं के बाद स्कूल छोड़ दिया था। वे लकड़ी और धातु का काम जानते थे।

2006
जिस साल चावेज़ ने कचरे के ढेर पर काम शुरू किया

5
शुरू में बाँटने के लिए साज़

25,000
2012 में ढेर के पास परिवार (AP)

गोमेज़ ने ओवन की पुरानी ट्रे से वायलिन और तेल के ड्रमों से चेलो बनाए। दूसरे कारीगरों ने बोतल के ढक्कनों और धातु के पाइपों से सैक्सोफ़ोन बनाए। टिन के डिब्बे बाँसुरी बन गए। पुराने एक्स-रे ढोल की खाल बन गए।

इन साज़ों को बेचकर कुछ नहीं मिल सकता था। इसलिए किसी बच्चे को बाहर नहीं रहना पड़ा।

बाहर निकलने का रास्ता

जल्दी ही एक ऑर्केस्ट्रा बन गया। AP के मुताबिक़ 2012 में उसमें लगभग 20 बच्चे बजाते थे। वे मोज़ार्ट, बीथोवेन और बीटल्स की धुनें बजाते थे। उसी साल वे ब्राज़ील, पनामा और कोलंबिया गए।

तानिया वेरा, 15 साल की, एक गंदे नाले के किनारे लकड़ी की झोपड़ी में रहती थी। ऑर्केस्ट्रा उसे रियो दि जनेरो ले गया। उसने कहा कि वहाँ उसने समुद्र में नहाया। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसके सपने सच होंगे।

चावेज़ कहते हैं कि उनका लक्ष्य संगीत से आगे है। वे बच्चों और उनके परिवारों के लिए कचरे के ढेर से बाहर निकलने का रास्ता चाहते हैं। वह ढेर आज भी इस्तेमाल में है। ऑर्केस्ट्रा पर एक फ़िल्म, *Landfill Harmonic*, भी बन चुकी है।

कब क्या हुआ

- **2006** फ़ाबियो चावेज़ कातेउरा के कचरे के ढेर पर काम शुरू करते हैं।
- **2012** ऑर्केस्ट्रा ब्राज़ील, पनामा और कोलंबिया में बजाता है।
- **2013** वह एम्स्टर्डम में एक संगीत समारोह में बजाता है।
- **2016** फ़िल्म Landfill Harmonic अमेरिका में रिलीज़ होती है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

साज़ कचरे से बने हैं, इसलिए उन्हें बेचकर कुछ नहीं मिलता। इसी वजह से हर बच्चे को एक साज़ मिल सकता है।

जिन बच्चों के माँ-बाप शहर का कचरा छाँटते हैं, वे अब ऐसा संगीत बजाते हैं जिसे विदेश के श्रोता सुनना चाहते हैं।

हमारी राय

कचरे के ढेर ने बच्चों को साज़ दिए, और संगीत ने उन्हें दुनिया की नज़र में आने का रास्ता दिया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 सीमा को नियम बनाइए

चावेज़ महँगे वायलिन नहीं बाँट सकते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे साज़ बनवाए जिन्हें बेचकर कुछ नहीं मिलता।

यह आज़माएँ: अपनी एक सीमा का नाम लीजिए। पूछिए कि वह क्या संभव बना सकती है।

2 हुनर वाले से माँगिए

उन्होंने एक कचरा बीनने वाले और बढ़ई से साज़ बनाने को कहा।

यह आज़माएँ: अपने आसपास किसी ऐसे व्यक्ति से, जिसमें वह हुनर है जो आपमें नहीं, एक छोटे काम में मदद माँगिए।

3 जो पास है उसी से शुरू कीजिए

उन्होंने दो गिटार और बाँटने के लिए पाँच साज़ों से शुरुआत की।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते उसी से शुरू कीजिए जो आपकी मेज़ या शेल्फ़ पर पहले से है।

4 लोगों को रास्ता दीजिए

हर बच्चा संगीत स्कूल में आ सकता है। जैसे-जैसे वे सुधरते हैं, वे ऑर्केस्ट्रा में पहुँचते हैं।

यह आज़माएँ: सिर्फ़ सलाह नहीं, किसी एक व्यक्ति को लक्ष्य तक के साफ़ क़दम दीजिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

जो शहर फेंक देता है, उससे भी संगीत बन सकता है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

NBC News (from the AP)
‘A way out of the landfill’: Paraguay kids play Mozart with violins made from trash (2012)

Gulf Times (from the Guardian)
Landfill orchestra makes music from rubbish (2013)

Equal Times
The youth orchestra that turns waste into musical instruments (2016)

तथ्य-जाँच नोट: तीनों स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। ऑर्केस्ट्रा 2006 में शुरू हुआ (Equal Times, Gulf Times); AP कहता है कि चावेज़ ने अपना संगीत स्कूल 2012 से “पाँच साल पहले” खोला, यानी लगभग 2007 में; कहानी 2006 उस साल के लिए देती है जब उन्होंने कचरे के ढेर पर काम शुरू किया। पहले कचरे के साज़ कैसे बने, इसमें फ़र्क़ है: AP कहता है कि चावेज़ ने गोमेज़ से छोटे बच्चों के लिए साज़ बनाने को कहा; Equal Times कहता है कि उन्होंने उनसे एक टूटा वायलिन ठीक करने को कहा, और गोमेज़ ने उसकी लकड़ी और धातु के

टुकड़ों से नया बनाया; Guardian कहता है कि समूह ने कचरे से साज़ इसलिए बनाए कि असली साज़ बाँटने के लिहाज़ से बहुत क़ीमती थे। कहानी सिर्फ़ इतना कहती है कि चावेज़ ने गोमेज़ से मदद माँगी। आकार: लगभग 20 बच्चे (AP, 2012) या 30 (Guardian, 2013); Equal Times कहता है कि अब सैकड़ों बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं; कहानी AP का 2012 का आँकड़ा देती है और उसका नाम लेती है। ढेर के पास 25,000 परिवार AP का 2012 का आँकड़ा है। “पाँच साज़” और दो गिटार क्रमशः AP और Equal Times से हैं। एम्स्टर्डम का संगीत समारोह Guardian से है, जो मई 2013 में छपा। Guardian का लेख Gulf Times पर पढ़ा गया, जो उसे दोबारा छापता है। उद्धरण Guardian से है। तानिया वेरा के शब्द AP के हैं, 2012 के। फ़िल्म की तारीख़ अलग-अलग है: Wikipedia कहता है कि वह 2015 में फ़िल्म समारोहों में पहली बार दिखी; Equal Times कहता है कि अमेरिका में उसकी आधिकारिक रिलीज़ सितंबर 2016 में थी। Wikipedia का ब्योरा, जिसमें संगीत स्कूल के एक और सह-संस्थापक का नाम है, इस्तेमाल नहीं किया गया। आँकड़े 2012 से 2016 के हैं और बदल चुके हो सकते हैं। नक़्शे का निशान कातेउरा के कचरे वाले इलाक़े को दिखाता है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।